

By - Dr. Shyam Bhanu Choudhary

Date

छात्रों को परीक्षा प्रश्नों के आधार पर प्रथम (First), द्वितीय (Second), तृतीय (Third) श्रेणियाँ या अनुत्तीर्ण (Fail) निर्धारित करना। लम्बाई के आधार पर लम्बा (Tall), औसत (Average) या नारा (Short)। कक्षा स्तर के आधार पर प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, स्नातक स्तर आदि में बाँटना। विश्वविद्यालय अध्यापकों को प्रोफेसर, रीडर, या प्रोफेसर में बाँटना। अभिभावकों को उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर उच्च, मध्यम, या निम्न वर्गों में बाँटना। इन वर्गों को घटते अथवा बढ़ते क्रम (Order) में व्यवस्थित किया जा सकता है। इसके अंतर्गत आवृत्ति वितरण, बहुलांक, मध्यक, चतुर्थक, कक्षांक, प्रतिशतक, श्रेणी क्रम सहसम्बन्ध (Rank Order Correlation) हो सकते हैं।

3. अन्तरित मापन Interval Measurement

यह नामित व क्रमित मापन से अधिक परिभाषित होता है। अंतरित मापन गुण की मात्रा अथवा परिमाण (Quantity) पर आधारित होता है। किन्हीं दो लगातार इकाइयों में अन्तर समान होता है। जैसे छात्रों को गणित योग्यता के आधार पर अंक प्रदान करना अन्तरित मापन का स्वसहस उदाहरण है। यहाँ स्पष्ट होता है कि 35-36 के बीच हीक वही अन्तर होता है जो 48-49 अंकों के बीच होता है। इन इकाइयों के साथ जोड़ व घटाने की गणितीय संक्रियाएँ की जा सकती हैं। अन्तरित स्तर के मापन में परम शून्य (Absolute Zero) या वास्तविक शून्य (True Zero) जैसे गुणविहीनता (Lack of Existence) को व्यक्त करने वाला कोई बिन्दु नहीं होता है। इस स्तर के मापन परिणाम सापेक्षिक (Relative) होते हैं परन्तु निरपेक्ष (Absolute) नहीं होते हैं। गुणा (x) तथा + (मात्रा) की संक्रियाएँ काना संभव नहीं होती हैं यदि कोई किसी गणितीय परीक्षण पर शून्य अंक प्राप्त करता है तो इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वह परीक्षण में कुछ नहीं जानता है। बल्कि परीक्षण की स्तर को अक्षर्य है।